Research Paper | Literature | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 3 | Issue : 11 | Nov 2017

JEEVANIPARAK UPNYAS AUR DR RANGEY RAGHAV

जीवनीपरक उपन्यास और डॉ.रांगेय राघव

Dr. Bheemsing Rathod

MA., Mphil., MEd., PhD., Hindi Assistant Professor, Plot No. 56, Sarve No. 40, Kushnur Road, Kalburgi-585106.

प्रस्तावना:
सारा साहित्य ही मनुष्य का अध्ययन है, वास्तविकता यह है कि मनुष्य का सबसे बडा आकर्षण केन्द्र साहित्य ही है । जीवनी और आम कथाओं में सत्य और वास्तविकता का सहारा लिया जाता है । जीवनीपरक उपन्यासकार अतीत कालीन किसी नायक के साथ – साथ घटनाओं के साथ कल्पना का सहारा लेकर एक ऐसी कृति का सृजन करता है जो वर्तमान युग में इससे दिशा मिले और अतीत के बारे में मौलिक ज्ञान प्राप्त कर सके । इसीलिए जीवनी कार को इतनी ख्याति उपलब्ध नहीं होती जितनी जीवनीपरक उपन्यासकार को होती है। जीवनीकार कल्पना का सहारा लेता है. लेकिन इस कल्पना को सामग्री संकलन और प्रकाशन की विधि में उससे काम लेता है। परंतु उसकी जो कल्पना होती है वह वास्तविकता से सीमित रहती है ।

जीवनी परक उपन्यासकार में ऐतिहासिक पात्र के साथ साथ सत्य घटनाओं का सहारा लेते हुए कल्पना का समावेश कर इस कृति का सृजन किया जाता है, इससे लेखक बंधन का अनुभव नहीं करता यह अनेक विधाओं में ऐसी विधा है, जो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप और परिभाषा के संबंध में उल्लेखनीय विवेचन नहीं है । क्योंकि इस विधा में एक ओर जीवनी विधा का समावेश है तो, दूसरी ओर उपन्यास विधा का । फिर भी हम जीवनीपरक को निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित करते है।

जीवनी परक, उपन्यास विधा का वह रूप है जो किसी व्यक्ति विशेष के वास्तविक जीवन चरित्र के आधार पर लिखा गया हो, जीवनी परक उपन्यास को हम इस प्रकार भी कह सकते है, जीवनीपरक उपन्यास हिन्दी साहित्य की वह नूतन विधा है जिसमें अतीत कालीन पात्र, वातावर्ण एवं घटनाओं के ज्ञात तथ्थों को संभाव्य कल्पना के परिप्रेक्ष्य में मनौवैज्ञानिक व कल्पनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है । इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि जीवनी परक उपन्यास में एक ओर जीवनी साहित्य में समाहित ऐतिहासिकता का समावेश है तो, दूसरी ओर स्वच्छ है, उपन्यास विधा का समावेश है क्योंकि विधा में जीवनी और उपन्यास इन दोनों साहित्यिक विधा का सम्मिश्रण है।

साहित्य की अनेक विधाओं में समान्यत मानव के जीवन से संबंधित अनेक छोटी–छोटी घटनाओं का इस तरह गुंफन किया गया जाता है। जिसे विविध फुलो से बनी माला का उसी तरह जीवन की घटनाओं के गुंफन का संयोजन ही कथानक या कहानी है यही तत्व जीवनी, उपन्यास के और जीवनीपरक उपन्यास का भी आधार स्तंभ है. लेखक अपने लेखनकला से इन दोनों तत्वों की गहनता, सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करना व्यह लेखक पर ही निर्भर रहता है। जीवनी, उपन्यास और जीवनीपरक उपन्यासों में घटना संयोजन के अंतर्गत जो प्रश्न समाहित है वह अपने अपने स्वरूप पर निर्धारित किए जाते है। अतः कहा जाता है कि जीवनी परक की अपेक्षा जीवनीपरक उपन्यासकार को रचना सृजन में नायक के चरित्र का विकास करने के लिए वह उपकथाओं अथवा कल्पित घटनाओं का सहारा लेकर कृतिका निर्माण कर सकता है ।

जीवन चरित्रात्मक उपन्यास आधुनिक हिन्दी साहित्य की नवीनतम विधा है, जीवन चरितात्मक उपन्यास युग के महान व्यक्तियों की जीवनी को प्रस्तुत करता है । इतिहास की तरह नहीं, उपन्यास की तरह, व्यक्ति के बारे में ऐतिहासिक तथ्य तिथि का जिक्र मात्र ही इसमें नहीं होता, वस्तु व्यक्ति के उसके युग–परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा जाता है, इससे व्यक्ति अपने चारो के वातावरण से प्रभावित होता हुआ, समाज की कुरीतियों से संघर्ष करता हुआ उभरकर आता है । इस संघर्ष के बीच व्यक्ति अपने विचारों की महानता दृष्टि की विशालता और मस्तिष्क की प्रगतिशीलता के साथ उभर आता है. इस प्रकार जीवनचरितात्मक उपन्यास अपने आप में एक अत्यंत मौलिक नवीनतम प्रयोग है । इसे ऐतिहासिक उपन्यासों की कोटी में नहीं रखा जा सकता ।

हिन्दी का प्रथम जीवनीपरक उपन्यास किसे माना जाय, यह बताना अत्यंत कठिन है, डॉ.लालसाहब ने डॉ. रांगेय राघव का प्रथम जीवनीपरक उपन्यासकार माना है परन्तु, हमारी दृष्टि में रांगेय राघव के पहला जीवनीपरक उपन्यास 'भारती का सपूत' (१९५४) से पूर्व (१९४६) में 'वंदनलाल वर्मा कृत 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत 'बाण भट्ट की आत्मकथा' जैसे श्रेष्ठ जीवनीपरक उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे । इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी के प्रथम जीवनीपरक उपन्यासकार के रूप में डॉ. रांगेय को ही नहीं माना जा सकता ।

वास्तविक रूप से देखा जाय तो हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यासों का विकास ऐतिहासिक चरित्र प्रधान उपन्यासों से हुआ है। प्रेमचंद पूर्व युग में चरित्र प्रधान उपन्यासों का उदभव हुआ । इसी युग में किशोरीलाल गोस्वामी ने ऐतिहासिक चारित्रात्मक उपन्यास लिखे है. जिससे जिवनीपरक उपन्यासों के बीज बोये जा सकते है । जैसे 'कनक कुसुम व मस्तानी' १९०३, तथा सुलताना रजिया बेगम व रंगमहल आदि इन दोनों उपन्यासों का सृजन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर किया गया है । इन उपन्यासों में पुणे के बाजीराव पेशवा की प्रेमिका मस्तानी का जीवन चरित्र 'कनक कुसुम व मस्तानी' का चरित्र अंकित करने में लेखक को अपार सफलता प्राप्त हुई है। इसमें रजिया बेगम के आंतरिक भावनाओं का चित्रण मनौवैज्ञानिक यथार्थवाद के आधार पर विकसित करने का प्रयास किया गया है। उसका चारित्रिक विकास पूर्णतया मनौवैज्ञानिक ढंग पर किया गया है।

रचनाकाल की दृष्टि से पूर्व इतिहास की जानकारी के अनुसार हिन्दी जीवनीपरक उपन्यासों का बीजवपन भले ही प्रेमचंद पूर्व युग के अंतर्गत श्री किशोरीलाल गोस्वामी कृत, कनक कुसुम वा मस्तानि तथा सुलताना रजिया बेगम ब रंग महल में हलाहल में देखा जा सकता है । परन्तु इस धारा के उपन्यासों का प्रवर्तन १९४६ में श्री वृंदनालाल वर्मा कृत – झांसी की रानी लक्ष्मिबाई के सृजन के साथ हुआ. इसीतरह आज के जो जीवनीपरक उपन्यास है, उसे दशकों में विभाजित करे तो यह ज्ञात होता है की, पांचवे दशक में दस, छटवे दशक में बारह, सातवे दशक में एक, आठवे दशाक में

दस तथा नौवे दशक में ग्यारह उपन्यास लिखे गये है, सबसे अधिक उपन्यास छटवे और नौवे दशक में रचे गये है।

विषय वस्तु की दृष्टि से विषय वस्तु देखा जाय तो जीवनीपरक उपन्यासों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है । पुराणिक जीवनियों से संबंधित २. ऐतिहासिक जीवनियों से संबंधित पौराणिक जीवनियों से संबंधित उपन्यासों को पुनः दो भागों में वर्गीकरण किया जाता है।

बाण भट्ट की आत्मकथा, भारती का सपूत और मानस का हंस आदि साहित्यिक इतिहास से संबंधित जिवनीपरक उपन्यास है. इस प्रकार के उपन्यासों को भी दो श्रेणियों में वर्गिकृत किय जा सकता है।

संस्कृत साहित्य से संबंधित और हिन्दी साहित्य से संबंधित उल्लेखनीय बात यह है कि हिन्दी में साहित्यकारों में की जीवनियों पर ही अधिक मात्रा में औपचारिक रचनाएँ रची गई है। उदाहरण के अनुसार गोरखनाथ, तुलसीदास, सूरदास, मीरा, शंकराचार्य, आदि पर दो दो उपन्यास लिखे गये है । यहाँ स्मरण रखने की बात है कि पूर्वकाल में इन साहित्यकारों पर अनेक लेखको के द्वारा जीवनी साहित्य भी लिखा गया है।

जीवनीपरक उपन्यासों का दूसरा वर्ग है, जो इतिहास से अलग है। इस वर्ग में राजनीति, संस्कृति या धर्म दर्शन के इतिहास से संबंधित व्यक्तियों के जीवन चरित्र को आधार बनाकर हिन्दी में औपन्यासिक कृतियों की रचना साध्य हुई है। जैसे 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' माधव जी सिंधिया, अनुत्तर योगी, दूसरा सूरज आदि ऐसे उपन्यासों की संख्या लगभग आधा दर्जन है।

पौराणिक जीवनियों से संबंधित लगभग दर्जन उपन्यास हिन्दी में लिखे गये है, पौराणिक उपन्यासों में भगवान श्रीकृष्णा के जीवन पर तीन रचनाएँ है.

द्रौपदी के चरित्र पर लिखी 'महाभारती' नामक एक रचना है., भगवान श्रीराम के चरित्र पर भी नरेंद्र कोहली ने लिखा है, इस तरह से वर्गीकरण करने के पश्चात हम इस नतिजे पर पहुँचते है कि हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यासों का सृजन सर्वाधिक रांगेय राघव ने किया है।

अधार ग्रंथ:

१) अमृत लाल नागर के जीवनी परक उपन्यास – डॉ. सुरेखा

२) हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण – डॉ.रणवीर रांग्रा

३) हिन्दी उपन्यास: उदभव और विकास – डॉ. सुरेश सिन्हा